राजस्थानी बात– कहानियों की शैली

*डॉ. गोकुल चन्द सैनी

भाषा और शैली दो विभिन्न तत्व हैं किन्तु दोनों के बीच घनिष्ठता के कारण दोनों को एक माना गया है भाषा से अभिप्राय है कथ्य का शब्द रूपी शरीर और शैली से अभिप्राय है वह ढ़ंग जिसके द्वार कथाकार अपने विचार और भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। भाषा शैली भावों तथा विचारों की वाहक है। इस तत्व के बिना कथ्य कथा का रूप धारण नहीं करता। इस तत्व के समीप होने पर कथा के दूसरे तत्वों की दुर्बलता छिप जाती है। देथा जी के समस्त बात साहित्य का अध्ययन करने के बाद पता चलता है कि इन्होंने इस साहित्य में निम्नलिखित शैलियों को अपनाया है, जिनमें वर्णनात्मक शैली, राजस्थानी शैली, प्रतीकात्मक शैली लोक–मुहावरेदार शैली, भावात्मक शैली व चित्रात्मक शैली प्रमुख है।

क. वर्णनात्मक शैली

इस शैली में कहानीकार एक कथावाचक की भांति पूर्णतः तटस्थ होकर कहानी की सृष्टि करता है। यह सृष्टि पूर्ण वर्णनात्मक ढ़ंग की होती है, अतः समूची कहानी का सूत्रधार स्पष्ट रूप से कहानीकार होता है। कथावाचक की भांति कथाकार पात्रों के वर्णन, घटना के चित्रण और कहानी के समस्त तत्वों को अपनी वर्णनात्मकता में समेट कर कहानी को पूरा करता है। यह शैली कहने की सबसे आदि और प्रचलित शैली है। आश्वासन कहानी का उदाहरण दृष्टव्य है – "सुथार को कारीगरी की बनिस्पत गपशप करने का अधिक शौक था। कभी वादे पर किसी का काम नहीं करता था, फिर भी बस्ती के लोग उससे बहुत खुश थे। उस सुथार का ऐसा बेढ़ब स्वभाव था कि वो न तो कभी स्पष्ट इन्कार करता था, न कभी किसी काम के लिए टाल–मटोल करता था, न कभी किसी का काम निबटाता था। दिलासे–दिलासे से लोग बाग पूर्ण सन्तुष्ट हो जाते थे।1 दूसरा उदाहरण इस प्रकार है– वे पाँचों ही इन्सान थे। कोई उम्र में छोटा, कोई बड़ा। सब तीस और पचास के बीच में थे। सबसे बड़े के बालों में कहीं–कहीं सफेदी झाँकने लगी थी। बाकी सभी के बाल एकदम काले थे। चेहरे इन्सान जैसे ही थे। आँखों की जगह आँखें। नाक की जगह नाक। दाँतों की जगह दाँत। हाथ–पैरों की जगह हाथ–पैर। तांबई रंग। सफेद पगडियां। कोई नयी कोई पुरानी। लट्ठे के सफेद चोले और सफेद ही धोतियाँ। कानों में सोने की साँकलिया और मुरकियाँ। तीन के गले में काले डोरे से बंधी सोने की मूरतें। सभी इन्सान की बोली बोलते थे और इन्सान की ही चाल चलते थे।1 क

ख. राजस्थानी शैली

स्व. श्री सूर्यकरण जी पारीक राजस्थानी शैली की विशेषता बतलाते हुए कहते हैं, "सबसे विचित्र बात जो राजस्थानी कहानी में देख पड़ती है वह है उसकी शैली की विलक्षण वैयक्तिकता, राजस्थानी कहानी की शैली राजस्थानी ही की है। उसकी समता दूसरी भाषा में ढूंढना निरर्थक है। यह गूंगे का गुड़ है जो वर्णनानीत है।

राजस्थानी कथा की शैली अपनी स्वयं की विशेषता रखती है। कहीं इस शैली द्वारा भूत–प्रेत, शकुन, स्वप्न, देवी–देवता, जादू–टोना आदि अलौकिक तत्वों का वर्णन पाते हैं तो कहीं यह शैली पशु–पक्षी तथा पेड़–पौधों

को पात्रों के रूप में उपस्थित करती है तो कहीं प्रेमी–प्रेमिका के के प्रिय संदेश भेजती है। इस शैली द्वारा चित्रित वर्णन मानव हृदय के साथ सहज ही में तादात्य स्थापित कर लेते हैं। इस शैली में एक और बात देखने को मिलती है कि कथा तत्व में मुख्य कथा के अतिरिक्त छोटी–बड़ी अन्य सहायक कथाओं का प्रयोग भी मिलती है। इस दृष्टि से विजयदांन देथा की "गंवार का सपना', 'ठाकुर का भूत', 'दुविधा', 'अनोखा पेड़' व 'कागमुनी' जैसी बातों को देखा जा सकता है, जिनमें इस शैली का प्रयोग देखने को मिलता है। कागमुनि कहानी में सांप चिड़िया, कौआ और नेवला चारों पशु–पक्षी हैं, लेकिन वे इस कहानी में सामान्य पात्र के रूप में चित्रित हुए हैं। कहानी में 'एक पेड़ पर रहने वाली चिड़िया के बच्चों को सांप खा जाता है, चिड़िया सांप के ऐसा करने के लिए मना करती है, लेकिन सांप नहीं मानता। अन्त में चिड़िया उस वृक्ष को छोड़कर दूसरे वृक्ष पर अपना घोंसला बनाती है। सांप वहां पर भी आ जाता है। चिड़िया ने इसकी शिकायत कौआ से की और कौवे को धर्म भाई बना लिया। अन्त में कौआ अपने दोस्त नेवले से सांप की शिकायत करता है। नेवला सांप को मार देता है, और अन्त में कमेड़ी, कौआ और नेवला को बधाई देती। 3

ग. प्रतीकात्मक शैली

इस शैली में शीर्षक सांकेतिक होते है। उनकी कथा में भी प्रतिकों का प्रयोग होता है। इस शैली की कहानियाँ प्रभावशाली होती है। इस शैली के दो रूप होते है– कलात्मक तथा भावात्मक। कलात्मक रूप में कला सम्बन्धी प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। वहां पर प्रतीक विधान का उद्देश्य केवल कलात्मक सौन्दर्य उत्पन्न करना होता है। भावात्मक रूप में प्रतीक भी प्रेम, घृणा, क्रोध आदि विविध भावों को व्यक्त करने वाले होते हैं। कामेषणाओं की अभिव्यंजना में प्रतीकों की अधिक प्रयोग होता है। प्रतीकों के माध्यम से कई बार मनुष्य की सूक्ष्म प्रवृतियों का चित्रण किया जाता है। इससे अभिव्यक्ति में सुन्दरता व प्रभावात्मकता आती है। मानसिक संघर्ष को व्यक्त करने में भी प्रतीक शैली से काफी सहायता मिलती है। संघर्ष की विविध स्थितियों को प्रतीक सरलतापूर्वक व्यक्त कर देते हैं। इस शैली में लिखी गई देथा जी की कहानियों में ('अनेकों हिटलर', 'कागपन्थ' व 'आसमान जोगी' प्रमुख हैं। 'अनेकों हिटलर' कहानी में पांचों भाई सामन्तवाद या पूंजीवाद के प्रतीक हैं और उनका बहुत ही सशक्त अंकन इस कहानी में हुआ है जैसे– 'पंचि भाई ट्रेक्टर खरीद कर लौट रहे थे। पैसे वाले हैं। नया–नया ट्रेक्टर खरीदा है, दनदनाये गाँव की पक्की सड़क पर चले आ रहे है। तभी देखते क्या हैं कि एक साइकिल सवार उन से आगे निकला जा रहा है। यह तो बर्दाश्त के बाहर की बात थी। सो ट्रेक्टर साइकल से भिड़ा और पिछले टायर ने नंगे सिर का कचूमर निकाल दिया। 4 इस प्रकार पैसा और ताकत न सिर्फ स्त्री–पुरूष सम्बन्धों को बल्कि सभी मानव सम्बन्धों को एवं पूरे समाज को नष्ट करते हैं। हिटलर मर गया, लेकिन अनेकों हिटलर अभी भी जिन्दा हैं, जो पूरे समाज को चला रहे हैं। घर की खाट से लेकर ऊपर तक एक ही चीज है जो राज कर रही है। वह है पैसा और पैसे की ताकत।

घ. लोक मुहावरेदार शैली

लोक कथा की इस शैली में एक स्वायत्तता और सात्विकता अपने आप विकसित होती है। कहना न होगा कि इस सार्वजनीनता को सम्भव बनाती है– लेखक की व्यापक और गहरी जीवन–दृष्टि। इस शैली में देथा जी लोक मुहावरे को अपनी संवेदना के साथ ढ़ालते हुए, बदलते हुए, एक बिल्कुल नया मुहावरा रचते हैं–जिसमें लोक जीवन के भाव है। भावुकता नहीं। भावुकता की जगह आधुनिक संवेदना का व्यंग्य है। यह गौर–तलब है कि ये खास राजस्थानी लोक मुहावरें में लिखी कहानियां ऐसे शुरू होती हैं, एक वक्त के ढ़लान पर हवा और धूप के किनारे या जमीन और आकाश के दरमियान, किसी पहाडी पर आदि–आदि। देथा जी की 'सपनप्रिया कहानी' संग्रह की अधिकांश कहानियां इसी शैली में लिखी गई हैं जिनमें 'सपनप्रिया', 'परिक्रमा', 'आसीस', 'खीरवाला राज्य', 'गिरवी

जोबन', 'हडकम्प' व 'भूल–चूक लेनी–देनी' कहानी प्रमुख है। 'आसीस' कहानी का एक उदाहरण, 'भांति–भांति' के लोग। गात–गात के रोग। बात–बात का योग। हाथ–हाथ का जोग। जितने लोग, उतने व्यवहार। जितने रोग, उतने उपचार। जैसी नीयत, वैसा हाल। जैसा अन्तस्, वैसा भाव। जैसा दाँव, वैसा उपाय। 5 इस शैली का दूसरा उदाहरण इस प्रकार है– 'जिसका मन ज्यों माने, साँई सबकी ताने। तो रामजी सबकों ही भले दिन दें– एक था राजा। जिसे अपच की बीमारी थी। राज–रसाई में तरह–तरह के पकवान बनते, पर राजा को देखते ही उबकाई आती। राज्य के तमाम वैद्य हकीमों ने अनेक जड़ी–बूटियाँ, सोने और मोतियों की भस्म और भी जाने क्या–क्या औषधियां, क्या–क्या उपचार किये, पर राजा का हाजमा नहीं सुधरा सो नहीं सुधरा। साबूदाने की एक कटोरी के अलावा, उसे कुछ भी हजम नहीं होता था। लम्बा चौड़ा राज्य और अखूट खजाना, लेकिन राजा एकदम मरियल। न चैन पड़े, न चिन्ता मिटे। 6

ङ. चित्रात्मक शैली

इस शैली में लेखक शब्दों के माध्यम से एक चित्र सा प्रस्तुत करता है, जो अन्तः स्थल पर कुछ समय के लिए घटित हो जाता है, उसे ही चित्रात्मक इसमें शब्दों के द्वारा कल्पना का समावेश करता हुआ अपनी बात कहता है। इसमें पाठक को पढ़ते समय यही महसूस होता है कि अमुख घटनाएँ उसके सामने ही चित्र रूप में घट रही हैं। इस शैली को देथा जी की गई कहानियों में देखा जा सकता है। उनके द्वारा लिखी गई दुविधा कहानी का एक उदाहरण इस प्रकार है– 'घनी खेजड़ी की ठण्डी छाया। सामने हिलोरे मारता तालाब। कमल के फूलों से आच्छादित निर्मल पानी। सूरज सर पर चढ़ने लगा था। जेठ की तेज चलती गर्म लू से जंगल चीत्कार कर रहा था। कहानी में खेजड़ी की छाया, सामने तालाब और जेठ महिने की तेज गर्म लू आदि के वृतान्त से हृदय में एक चित्र सा बन रहा है। अतः यहां पर इस शैली का प्रयोग देखा जा सकता है।

दूसरा उदाहरण दृष्टव्य है – "गांव से आधे कोस पर एक बड़ा तालाब था। ऊची पाल। चारों–मेर जंगी रूख। एक बरगद तो बीस बरगद जित्ता बड़ा। दूर–दूर तक फैलाव। सेठ का सबसे छोटा बेटा नहाने के लिए पांव घसीटते हुए तालाब की ओर जा रहा था। उसके आगे–आगे पनिहारिनों का झुंड चल रहा था। सुरंगे वेश। सुरंगी ईढ़ानियां। फुँदनेदार लूंबे। सुरंगे घड़े–कलस। 8 इसमें भी कल्पना के मध्यम से एक चित्र सा बन रहा है और हृदय पर एक स्थायी प्रभाव पड़ रहा है, अतः यहां पर भी चित्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

तीसरा उदाहरण दृष्टव्य है– "चौहदस की निर्मल चांदनी सिट्टों के पाने में झुल रही थी। धीमी–धीमी ठंडी बयार से वह नींद में गाफिल हो गया। इस बीच चोरों ने पके हुए सिट्टों की गठरियां बांध ली। वे गठरियां उठाकर जाने को ही थे कि चौधरी चौंक कर उठ बैठा एक हाथ में गोफन और दूसरे में लाठी लिये हुए वह उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। वे चार और वह अकेला। 9

कोई भी लेखक या रचनाकार जब अपने साहित्य की रचना करता है, तब वह प्रायः कल्पना का सहारा लेता है। और कल्पना के माध्यम से एक ऐसा महल खडा कर देता है जो वास्तविक सा जान पड़ता है। कल्पना तत्व के संयोग से विषय में मार्मिकता व रोचकता आ जाती है।

आज बात साहित्य मौखिक व लिखित दोनों रूपों मे उपलब्ध हो रहा है। इस साहित्य में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी का अनुसरण माना गया है। जब बात समाज में पहले से ही लोक प्रचलित है, उस लोकप्रचलित बात को जब किसी को सुनाया जाता है तो बात कहने वाला उसमें अपनी तरफ से कल्पना समन्वित कर देता है। सुनने वाला भी बात में कल्पना को ज्यादा महत्व देता है, और जब कोई बात लिखने की कोशिश करता है तो वह उसमें अपनी तरफ से कल्पना कर बैठता है। इस प्रकार लोक नाट्य की प्रमुख विधा बात साहित्य में कल्पना तत्व को

अवश्य देखा जा सकता है।

*व्याख्याता– हिन्दी
स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय,
खेतड़ी

संदर्भ

1. दुविधा : विजयदांन देथा, कहानी आश्वासन, पृष्ठ–174
1. क दस प्रतिनिधि कहानियां : विजयदांन देथा, कहानी अनेकों हिटलर, पृष्ठ–113
2. राजस्थानी बातां : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक
3. उजाले मुसाहिब : विजयदांन देथा, कहानी कागमुनि
4. दुविधा : विजयदांन देथा, कहानी अनेकों हिटलर
5. सपनप्रिया : विजयदांन देथा, कहानी कहानी आसीस, पृष्ठ–140
6. सपनप्रिया : विजयदांन देथा, कहानी खीरवाला, राज्य , पृष्ठ–7
7. दुविधा : विजयदांन देथा, कहानी खीरवाला राज्य, पृष्ठ–7
8. बातां री फुलवाडी (भाग 10) : विजयदान देथा, पृष्ठ–15
9. चौधराइन की चतुराई : विजयदान देथा, कहानी मौके की सूझ, पृष्ठ 65